प्रवासी कलम-
अमेरिका से हिन्दी कहानी:-

वसूली

सुधा ओम ढींगरा

सुधा ओम ढींगरा

फाइल उसके सामने खुली पड़ी है। वकील ने उसे हस्ताक्षर करने के लिए स्याही से मार्क किए हुए स्थान को दिखा भी दिया है, पर वह शून्य में ताकता उस फाइल को देख रहा है। उस पर अंकित शब्द उसे दिखाई नहीं दे रहे। परतों से भीतर दबी- छुपी, सिमटी भावनाओं की नमी आँखों में फैल गई है। उसकी आँखें धुंधला गई हैं। उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा, अपने भाई को कैसे समझाए, कि वह अपना इरादा बदल ले। उसकी सब कोशिशें बेकार हो चुकी हैं। भाई जिद्दी तो बचपन से ही था पर अब उसके इन फैसलों को चोट पहुँचा रहे हैं, उसका भाई यह सोच भी नहीं रहा। क्या हो गया है उसके भाई को!

यह वही भाई है, जो उसे उँगली पकड़ कर स्कूल लेकर गया। उससे तीन साल बड़ा है। उसे वे पल आज भी याद हैं। भाई आठ का है और वह पाँच का। स्कूल के पहले ही दिन उसे महसूस हुआ, उसमें और बाकी बच्चों में अंतर है। हालाँकि उसके कपड़े धुले हुए और साफ-सुथरे हैं। पैरों में चप्पल, हाथ में बस्ता और तेल से चुपड़े बाल ढंग से कंघी किए हुए हैं। अध्यापक ने हिकारत से देख कर उसे कोने में बैठा दिया।

कुछ दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा। एक दिन उसने भाई को रोते हुए कहा-

'भाई मुझे स्कूल नहीं जाना... और वह सुबकता रहा...

भाई एकदम समझ गया, उसने बड़े प्यार से कहा- 'हरि हम लोग गरीब हैं। इसलिए हमारे साथ ऐसा सलूक किया जाता है। मेरी तरह पढ़ाई-लिखाई में अव्वल आओगे तो सबका व्यवहार बदल जाएगा।'

उसने शंकर देव, अपने बड़े भाई की बात मान ली। घर के हालातों ने उन्हें समय से पहले पक्का कर दिया, वरना पाँच और आठ साल की क्या उम्र होती है

स्मृतियों ने उसके मस्तिष्क पर एक जाला सा बुना हुआ है। वह उसकी एक-एक तार को पहचानता है, शायद वह बचपन और किशोरावस्था की स्मृतियों को छोड़ना ही नहीं चाहता। भीतर कहीं गहरे में उसने उन्हें पकड़ा हुआ है। कभी-कभी उसे महसूस होता कि वह स्वयं एक मकड़ी बन चुका है, जो उन स्मृतियों का जाल बार-बार बुनता है, उसे टूटने ही नहीं देता, तभी तो एक एक तार की याद ताजा है।

वह भी क्या करता? जिस परिवार में उसका जन्म हुआ था, उसके हालातों ने बचपन से ही उस पर इतना गहरा असर डाला कि वह आज तक उनसे छूट नहीं पाया। वह हैरान है, भाई कैसे भूल गया? कैसे इतना स्वार्थी हो गया? माँ और बहन-भाई उसे दिखाई नहीं दे रहे, जिनकी खातिर उन दोनों ने मिलकर दिन-रात मेहनत की थी।

ड्राइंग रूम में सारा मेहरा परिवार इकट्ठा हो कर बैठा है। माँ-बापू, तीनों बेटे, बहू और दो बेटियाँ। बड़े बेटे शंकर देव ने अपनी पत्नी उमा के साथ ड्राइंग रूम के दरवाजे से प्रवेश किया। परिवार के दूसरे बेटे हरि मोहन को अमेरिका से बुलाया गया है... समाचार ही ऐसा है कि हरि मोहन अपनी पत्नी सहित भारत पहुँच गया। शंकर देव के आते ही हरि मोहन ने बातचीत शुरू की...

'भाई आप जो कर रहे हैं, लगता है बचपन के अभाव, जवानी का संघर्ष सब भूल गए।' उसने अपने बड़े भाई को कहा।

'हरी, तुम शुरू से ही भावुक थे, विदेश जाकर तो भावनात्मक बेवकूफ बन गए हो। बचपन और जवानी के दिन याद रखने का किसके पास टाइम है। वक्त बहुत आगे निकल गया है और तुम अभी तक वहीं अटके हो।' भाई ने बड़े रूखे स्वर में उत्तर दिया।

'वहीं अटके हो का क्या अर्थ भाई! समय का काम है चलना और हम उसके साथ चलते रहते हैं। न वह रुकता है न हम रुकते हैं। यही जीवन है। जीवन की तो अंतिम साँसें फिर रोक देती हैं पर समय तो चलता ही रहता है। पर बीते वक्त के साथ जुड़े लोग, यादें और संघर्ष को भूल तो नहीं जाते। यह सच्चाई है। भावनात्मक बेवकूफी कैसे हो गई!' हरि की आवाज में तल्खी आ गई।

'तुम्हारे लिए यह सच्चाई है, मेरे लिए भावुकता।' शंकर ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा।

'आप बहुत बदल गए हैं।' हरि बस इतना ही कह पाया।

'हाँ मैं बहुत बदल गया हूँ। उस समय को याद रख कर क्या करूँ; जिसमें गरीबी और दिन-रात की मेहनत थी। मैं अब वह नहीं, तो उसे याद क्यों रखूँ, मैं वर्तमान में जीता हूँ और बहुत प्रैक्टिकल हो गया हूँ।'

'प्रैक्टिकल नहीं स्वार्थी जिसे माँ बाप का दर्द और भाई-बहनों के आँसू नजर नहीं आ रहे। आज आप जहाँ खड़े हैं, पुराने दिन उसकी नींव है और यह नींव ही आगे बढ़ने में सहायता करती है, प्रेरणा देती है और विदेश में मेरी

का साथ देते-देते कब हर काम सीख गया। बाबा ने सारी उम्र निम्न स्तर के क्लर्क रहे, न रिश्वत ली, न लेने दी। अफसरों के किसी काम के नहीं थे, इसीलिए तरक्की रुकती रही। आर.के. पुरम के घर में वे चार भाई और दो बहन हो गए।

'भाई आप किन सोचों में खो गए। आपने जवाब नहीं दिया।' सुरेन्द्र ने झिंझोड़कर उसे उसकी यादों से अलग किया।

'सुरेन्द्र मैं तो अमेरिका में था। बाबा रिटायर होने वाले थे और मैं चाहता था कि उससे पहले परिवार का एक घर बन जाए। रिटायरमैंट के बाद आर.के. पुरम वाला घर सरकार वापिस ले लेती। मैं माँ को फिर से किराये के घरों में रुलता नहीं देख सकता था। भाई को कहा जमीन खरीद लें और पैसा भेज दिया।'

'पर आपने उन्हें कहा नहीं था, घर माँ-बाबा के नाम पर हो।' पहली बार नरेन्द्र बोला।

'हाँ यह सख्ती से कहा था कि रजिस्ट्री माँ और बाबा के नाम पर हो। फिर घर तो उन्होंने खड़े होकर बनवाया, आप सब साथ थे, उसकी रजिस्ट्री भी माँ और बाबा के नाम होनी चाहिए, मैंने कहा था। मैंने सोचा वे वकील हैं, सब काम बढ़िया तरीके से कर लेंगे। मैं खुद नहीं समझ पा रहा भाई घर कैसे बेच रहे हैं? आज जो रूप देखा है, उनसे बात कैसे करूँ, बड़ा मुश्किल लग रहा है।' हरि ने निराशा से कहा...।

'भाई, आपने उनसे रजिस्ट्री क्यों नहीं माँगी? बहुत पहले उनकी मंशा का पता चल जाता।' नरेन्द्र ने कहा।

'मैं तो विदेश में बैठा था, आप सब लोग तो यहीं पर थे, आप लोगों ने क्यों किसी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। आप भी रजिस्ट्री माँग सकते थे।' सबको हरि की आवाज में उदासी के साथ थकान महसूस हुई।

'भाई हम तो छोटे हैं, हमारी कौन सुनता?' सुरेन्द्र ने तपाक से कहा।

'पर रजिस्ट्री देख तो सकते थे।'

'भाई गुस्सा होते कि हमें उन पर विश्वास नहीं है।' नरेन्द्र बोला।

'जिस भाई के साथ मैंने लम्बा समय गुजारा। उसे मैं कैसे रजिस्ट्री दिखाने के लिए कहता। मेरी स्थिति के बारे में सोचो। कितना कठिन है इस बात पर विश्वास करना कि मेरे आदर्शवादी भाई ने, जिसने सबको सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाया, स्वयं परिवार से गद्दारी कर गया।' उसका गला भर्रा गया।

माँ अपनी जगह से उठ आई और हरि के सिर और पीठ पर हाथ फेरने लगी। हरि को एक अरसे से माँ का यह स्पर्श नहीं मिला। वह माँ के सीने से लग गया। माँ ने उसे ज्यों ही बाँहों में समेटा दोनों का दर्द पिघलने लगा...।

थोड़ी देर बाद माँ ने खुद को संभाला, और सुलभा की ओर देखकर कहा- 'बेटी, अब तुम दोनों आराम करो। जब से आए हो, एक पल भी पीठ सीधी नहीं की।'

सुलभा हरि को लेकर अपने कमरे में आ गई। सुलभा तो बिस्तर पर लेटते ही सो गई। लम्बी फ्लाइट की थकान और दिन भर का तनाव दोनों मिलकर उसे नींद के झूले झुलाने लगे।

हरि का थकन खत्म कर चूर हो चुका है। बिस्तर पर लेटते ही उसे लगा मस्तिष्क ने कई मोर्चे खोल लिए हैं। नींद कोसों दूर भाग गई है। अतीत ने स्मृतियों का पर्दा उठा दिया और बीते कल के मंच खुले मैदान-सा नजर आने लगा...।

बाबा और माँ की सिलाई की आमदनी से आठ जनों का गुजारा मुश्किल हो रहा है...। वह कुछ अधिक संवेदनशील है... माँ की ओर देख नहीं पाता; जो सुबह उठकर बाबा को काम पर और बच्चों को स्कूल भेज कर सारा दिन घर के कामों में खपती है और देर रात तक बच्चों के साथ जग कर दूसरों के कपड़े सिलती है। माँ का बस एक ही ध्येय है, बच्चों को पढ़ाना है। वह एक पतली सी छड़ी लेकर बैठती और जिस बच्चे को भी नींद आती उसे उससे हिलाती, सोना नहीं, पढ़ना है। रात को उठकर चाय बना कर पिलाती और जिस दिन सिलाई से अच्छे पैसे मिले होते, उस दिन सबको दूध मिलता।

उसे याद आ रहा है, वह ग्यारहवीं में है। गणित और साइंस में बहुत तेज है। गणित के अध्यापक डी.पी. शर्मा उसे बहुत स्नेह देते हैं। वे उसकी माली हालत से भी परिचित हैं। उस दिन डी.पी. शर्मा ने उसे बुला कर कहा- 'हरि, स्कूल से पहले और स्कूल के बाद गणित की कुछ ट्यूशन करेगा। अच्छे पैसे मिल जाएँगे।' उसने खुशी-खुशी 'हाँ' कर दी।

दूसरे दिन ही सुबह चार बजे उसके साथ उठने लगी। उसे चाय की प्याली साथ देती। सुबह छह बजे घर से निकल कर वह देर रात तक घर आता। महीने बाद जब उसने ट्यूशन की राशि माँ के हाथ में रखी, माँ की खुशी

ने ही शादी और पार्टी का सारा इंतजाम किया

समय और जीवन ने अपनी रफ्तार पकड़ ली। बहनों के पत्र आते। उनसे उसे घर की सारी खबर मिल जाती। वहां से ही उसे पता चला, उसका भाई बिलकुल नहीं बदला। माँ से झगड़े बढ़ रहे हैं और एक दिन पत्र आया भाई ने अलग होने का फैसला कर लिया है। उसने सोचा यह एक दिन होना ही था। रोज-रोज के झगड़ों से भाई और उसका परिवार से अलग हो जाएँ, यही बेहतर है। वह और सुलभा भाई को पत्र लिखने की सोच ही रहे थे।

अस्सी-नब्बे के दशक में विदेश से देश में या देश से विदेश में फोन करना बहुत महंगा होता था। फोन खास दिन, त्योहारों और एमर्जेन्सी में किया जाता था। एक दिन घर से फोन आया, 'आप जल्दी आ जाएँ, शंकर भाई घर का अपना हिस्सा बेच रहे हैं, उन्होंने कागज तैयार कर लिए हैं और खरीदार भी ढूँढ़ लिया है।

पूरी रात अतीत खंगालने के बाद भी उसे अभी तक समझ नहीं आया, भाई किस हक की बात कर रहे हैं और घर में उनका हिस्सा कैसे ? यह घर पैतृक नहीं; जिसमें वे अपना हिस्सा माँग रहे हैं। एक भाई ने पैसा भेजा तो दूसरे ने खड़े होकर घर बनवाया और बनवाया भी परिवार के लिए, फिर हक कैसा?

उसका सिर भन्ना रहा है... विचार हथौड़े की तरह उसे चोट पहुँचा रहे हैं। भाई अपने हक की वसूली उनसे करना चाहते हैं क्यों? बाद भी उन्हीं की तरह हम घर का बेटा है फिर परिवार के लिए जो कुछ भी किया उसकी वसूली उससे क्यों? क्योंकि वह विदेश में है और दोनों पति-पत्नी मिलकर बहुत कमाते हैं पता है और कमा लेंगे। हमारे डॉलर नजर आ रहे हैं, वे भी रुपयों में बदल कर। हम डॉलरों में कमाते हैं तो डॉलर ही खर्च करते हैं, रुपये नहीं खर्चे कोई नहीं गिनता

उसे यह सोच तंग कर रही है कि भाई ने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की, उसने वहाँ कैसे और कितना संघर्ष किया? पराए देश, पराए लोगों में किस तरह अपना अस्तित्व बनाया होगा उसने। कितने घंटे अधिक काम करके अपनी सार्थकता सिद्ध की होगी। भाई के साथ-साथ किसी और ने भी कभी जानने की कोशिश नहीं की। सब लोग यही सोचते हैं कि विदेशों में डॉलर वृक्षों में उगते हैं और वहीं से उन्हें तोड़ कर भेज देंगे।

शंकर जब हक की बात करता है, तो उसे अजीब लगता है, कौन सा हक, किस बात का हक, वह समझ नहीं पा रहा। उसने तो कभी नहीं सोचा उसका भी कोई हक है। अपनों के लिए जो भी किया जाता है वह निःस्वार्थ होता है, हक लेने के लिए नहीं।

सत्तर-अस्सी के दशक में उसके साथ के अधिकतर भारतीय एक जैसी हालात-परिस्थितियों से आए थे। तकरीबन सभी के साथ लम्बा संघर्ष और आर्थिक तंगी थी। पर थे वे देश का 'ब्रेन ड्रेन'। नब्बे के दशक तक आते-आते अधिकांश के जीवन में एक जैसी घटनाएँ घटीं और उनके जीवन की कहानियाँ भी मिलती जुलती हो गईं। लंच या डिनर पार्टी में वे सब अपना दुःख साझा करते। वह गर्व महसूस करता। एक जैसे माहौल से निकल कर भी उसका जीवन अलग है। उसका परिवार दूसरों के परिवारों जैसा नहीं है। पर अब वह भी उनमें से एक हो गया है... उसकी कहानी भी तो उन जैसी हो गई है....।

उसे लगा उसके दिल की धड़कन बेकाबू हो रही है, वह बिस्तर पर उठकर बैठ गया। सुलभा भी उठ गई।

'मैं जानती हूँ, सारी रात आप सोए नहीं। रात भर स्मृतियों के जाले झाड़ते रहे। इससे कुछ हासिल हुआ? अधिक तनाव में आ गए हैं। समस्या का हल निकालें और आगे बढ़ें। इतना लम्बा सफर आप तय करके आए हैं और फिर सारी रात जागते रहे, हरि आपकी तबीयत खराब हो सकती है।' सुलभा का स्वर चिंतित है पर उसने प्यार से कहा।

'हल ही तो निकालने की कोशिश कर रहा हूँ। वही तो निकल नहीं रहा।' उसने सुलभा की ओर देखा।

'हल तो आपके पास है, आप निकालना नहीं चाहते। आप और मम्मी दोनों सच्चाई का सामना करने से कतरा रहे हैं।' सुलभा ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

'सुलभा तुम क्या कह रही हो, मैं समझ नहीं पा रहा।' कहते हुए उसने आँखें फेर लीं।

'हरि , आप और मम्मी दोनों जानते हैं कि भाई ने एक योजना के तहत यह किया है जमीन और मकान की रजिस्ट्री उन्होंने माँ और बाबा के नाम नहीं की, आपके और अपने नाम करवाई। उन्हें पता था, उनसे कोई

की सोच से बाहर है बेटे मां का कसूर नहीं, वे पढ़ी-लिखी नहीं। उन्होंने कभी जानने की कोशिश ही नहीं की, मुझे कैसी लड़की चाहिए? वे सिर्फ अपने मुताबिक, अपने हिसाब से बहू लाना चाहती हैं। तुम तो अंडरस्टैंड करो, मुझे उमा पसंद है और उमा ही मेरी पत्नी बनेगी मुझे इस विषय पर और बात नहीं करनी।' हरि वहाँ से उठकर चुपचाप घर आ गया। माँ को कुछ नहीं बता पाया। शायद भीतर कहीं वह माँ को सब कुछ बता कर कष्ट नहीं देना चाहता। वह यह समझ गया है कि भाई इश्क में हैं, और अब वे कुछ सुनने वाले नहीं।

कुछ दिनों बाद उसका एम.एस.सी, ऑर्गेनिक केमिस्ट्री का परिणाम आ जाता है और उसे स्वर्ण पदक मिलता है। छुट्टियों में उसने यूके और अमेरिका की कई यूनिवर्सिटीज में पीएच.डी के लिए आवेदन पत्र भरे थे, अमेरिका के विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय से उसे स्कॉलरशिप के साथ बुलावा आ गया।

बिस्तर पर लेटे उसे वह दृश्य भी नजर आ रहा है, नींद कोसों दूर है... उसके अमेरिका जाने की तैयारी चल रही है... माँ बेहद उदास और परेशान हैं। उसे महसूस हो रहा है, उसके जाने की जैसे माँ को खुशी नहीं है...। उनकी आँखों में वह हर समय नमी देख रहा है और उसने महसूस किया, कई बार वे शून्य में देखती रहती हैं।

एक दिन हिम्मत करके उसने माँ से पूछा था- 'माँ आपको मेरे अमेरिका जाकर पढ़ने की खुशी नहीं। आप तो चाहती थीं कि आपके बच्चे बहुत पढ़ें।'

'हरि, किस माँ को तुम्हारे जैसा बेटा पा कर खुशी नहीं होगी, और तू तो अमरीका जाकर पढ़ेगा, मुझे गर्व है तुझपर। पर दुखी भी रहती हूँ, शायद मतलबी हो रही हूँ, अमरिका बहुत दूर है। जो जाता है, लौट कर नहीं आता। तुम्हारे जाने के बाद बहुत अकेली हो जाऊँगी, बेटे, तुम्हारा मुझे बहुत आसरा है। शंकर का व्यवहार तो तुम देख रहे हो। मुझे उससे डर लगने लगा है। तुम्हारे बाबा अगर मजबूत होते तो मुझे यह दिन नहीं देखना पड़ता।' यह कह कर माँ बेतहाशा रोने लगी।

वह माँ को चुप कराता हुआ कह रहा है... 'माँ, रोज पत्र लिखूँगा, मैं रोज जवाब दूँगा। इस तरह मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा। और माँ मैं वायदा करता हूँ, वहाँ से पीएच.डी करके लौट आऊँगा यहीं तुम्हारे पास। यहीं रहूँगा... बस रोना बंद कर दें।'

अमेरिका पहुँच कर उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जिन कठिनाइयों से वह निकल कर आया है, उनके सामने ये चुनौतियाँ बहुत बौनी लगीं उसे।

उसने हर चुनौती और संघर्ष को सहर्ष स्वीकार किया। माँ का हर रोज पत्र आता, उसने हर रोज उत्तर दिया। एक दिन भाई का पत्र आया, वह शादी करना चाहता है, अगर वह घर का खर्चा सँभाल ले तो भाई कानून की पढ़ाई कर सकता है उसने 'हाँ' कर दी, बिना यह सोचे कि पैसा कहाँ से आएगा? स्कॉलरशिप की राशि से तो उसके अपने खर्च ही मुश्किल से पूरे हो पा रहे हैं

फिर भी उसने भाई को पत्र लिख दिया- 'आप अपनी पढ़ाई शुरू करें। मैं तीन साल घर का खर्चा सँभाल लूँगा। मेरी एक ही विनती है आपको, तीन साल आप उमा को घर में नहीं लाएँगे, और घर में माँ से सम्मानजनक व्यवहार करेंगे। तीन साल बाद तो मैं ही भारत आ रहा हूँ।' वह आज भी हैरान है तीन साल उसने कैसे लिख दिया। अढ़ाई साल के बाद उसने पीएच.डी कर ली।

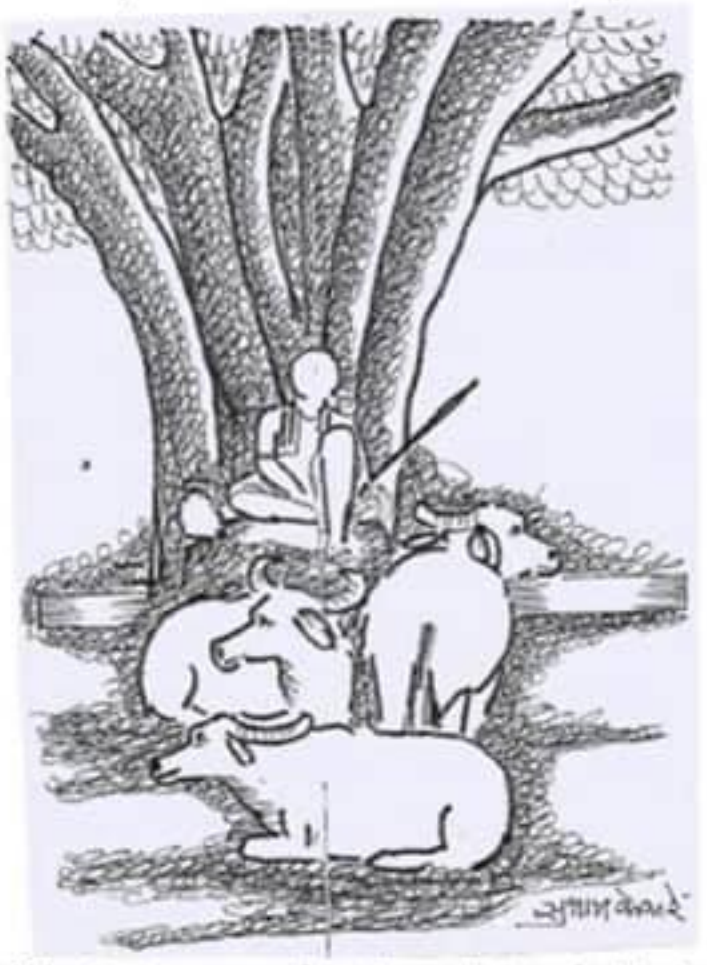

उसने भाई को तो लिख दिया पर पैसे की चिंता उसे सताने लगी। लैब में उसे और सुलभा को छोड़कर सभी स्थानीय शोधार्थी हैं। वह कैसे किसी को ट्यूशन के लिए कहे, उसे समझ नहीं आ रहा। स्थानीय शोधार्थी उसकी समस्या को समझ भी पाएँगे या नहीं, वह नहीं जानता।

वह हैरान है, सुलभा कैसे जान गई? सुलभा ने उसे एक फार्म दिया भरने के लिए। वह शाम को स्थानीय कम्युनिटी कॉलेज में गणित और साइंस पढ़ाने के लिए जॉब फार्म है। दो पीरियड पढ़ाने की अच्छी खासी राशि लिखी हुई है। उसने फटाफट फार्म भर दिया और तीन दिन बाद वह पढ़ाने लगा।

वह सुलभा से ज्यादा बात नहीं करता। सोचता रहा कि कौन सा अमेरिकन से कम है वह। भारतीय मूल की होते हुए भी पैदा तो अमेरिका में हुई है।

नौकरी लगने के दो दिन बाद उसने झिझकते हुए पूछा- 'आपको कैसे पता चला मुझे पैसे की जरूरत है!'

सुलभा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया - 'मिस्टर जॉनियस, शैन की छोटू भी दुर्गन्ध आपको परेशान नहीं कर सकती। यह मैं भांप गई हूं, बल्कि आप उन चुनौतियों का आनंद लेते हैं। देश से दूर कर आए बहुत दिन नहीं हुए, रिसर्च करते हुए खोए रहना, हर समय कुछ सोचते रहना। लंच में हर रोज सैंडविच खाना, मैं समझ गई, पैसे बचाए जा रहे हैं।'

'पर कोई और बात भी तो हो सकती है....।' उसने संकोच से कहा।

'इश्क के आसार नहीं लगते...।' वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

वह झेंप गया...

'मेरे पापा ने इसी तरह पैसे बचाए थे। वे अक्सर हमें बताते हैं मैंने उन्हें भारतीय रिसर्चर्स की मदद करते देखा है। वे विद्यार्थी आप ही की तरह बेचैन होते हैं। अब आपके चेहरे पर सकून दिखता है।'

'मैं तहेदिल से आपका आभारी हूँ।' उसने विनम्रता से कहा।

इसके बदले में उसने दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया हरि ने बहुत झिझकते-झिझकते उसे थामा।

संकोच दोनों की दोस्ती में पसरा रहा... लैब के बाहर कभी भी दोनों ने बात नहीं की। वह यह जरूर जान गया, सुलभा का जन्म यहाँ का है पर भारतीय लड़कियों से भी अधिक भारतीय है वह।

इसी बीच मां के पत्रों से उसे पता चलता रहा, भाई उमा को घर नहीं लाता। सबका ध्यान रखता है। माँ के साथ प्यार से पेश आता है माँ खुश है उसकी प्रार्थनाएं, उपवास काम कर रहे हैं।

अढ़ाई साल में पीएचडी करने के बाद वह डिग्री लेने के लिए रुका और उसने यहाँ के अपने कांट्रेक्ट को भी पूरा किया कुछ पैसे इकट्ठे किए और लौट चला अपने देश की ओर।

सुलभा एयरपोर्ट पर उसे विदा करने आई। कई और दोस्त भी आए। सबने उसे कार्ड दिए, जिस पर कुछ-कुछ लिखा था। सुलभा ने भी दिया।

जहाज में बैठकर उसने उन्हें पढ़ना शुरू किया। ज्योंही सुलभा का कार्ड खोला, उसमें एक हजार डॉलर और एक पत्र निकला-

जीनियस,

'जो कुछ कमाया है, सब खर्च हो जाएगा। वापिस आने के लिए टिकट के पैसे चाहिए होंगे। यहाँ लौटोगे तो दोस्त का उधार समझ कर रख लो।'

उसे सुलभा पर बहुत गुस्सा आया। क्या समझती है खुद को? मुझे दूसरे लोगों की तरह समझा है, लौट आऊँगा। मैं डिग्री लेने आया था लेकर जा रहा हूँ। घर पहुँचते ही इसके पैसे लौटा दूँगा।

घर पहुँचकर उसे बहुत अच्छा लगा। उसने चैन की साँस ली। अपने देश, अपने घर लौटकर उसे महसूस हुआ जैसे पिछले तीन सालों में वह अपना सुख चैन खो चुका था। उसे बेहद शांति मिली। अपना देश अपना होता है। यहाँ का माहौल, हवा-पानी कितना सुखद लगता है।

शंकर दूसरे दिन उसे उसी कॉफी हाउस में ले गया, जहाँ वह कभी उससे बात करना चाहता था।

'जानते हो मैं तुम्हें यहां क्यों लाया हूं, कभी तुम मुझसे बात करने यहाँ आए थे, आज मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।' शंकर ने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा।

कल से वह देख रहा है, कानूनी शिक्षा ग्रहण कर भाई में एक अलग तरह का आत्म-विश्वास आ गया है और भाई के बात करने का तरीका भी बहुत बदल गया है। उसे भाई में एक शातिर मनुष्य पैदा होता महसूस हो रहा है।

'जी कहें...।' विनम्र बात करना उसकी आदत है

'हरि सच्चाई यह है कि बाबा तीन साल में रिटायर हो रहे हैं और हमें सरकारी मकान छोड़ना पड़ेगा। मैं वकालत से जितना भी कमा लूँ और तुम यहाँ यूनिवर्सिटी में पढ़ा कर जितना भी कमा लो, हम कई वर्षों तक घर नहीं बनवा पाएँगे। परिवार फिर किराए के मकानों में भटकेगा। समय की माँग है कि तुम वापिस अमेरिका चले जाओ और एक दो साल काम करके, परिवार के लिए घर बनवा कर लौट आओ।' ऐसा कहते हुए शंकर बहुत गम्भीर था।

इस बात ने उसके बदन में हलचल की। कड़कती दुपहरी में सामान लेकर माँ का बच्चों के साथ सड़क पर बैठना, सोच कर वह काँप गया। माँ किराये के घर में नहीं रहेगी। भाई के चेहरे पर उसे गंभीरता और ईमानदारी दिखी। उसने भाई के प्रति अपने विचारों को झिटक दिया। उसे अपने पर गुस्सा आया, वह खामख्वाह मीन मेख निकालने लगा है।

'हरि, एक बात और तुम्हें बतानी है, उमा से मैं दूर रहा और उस समय मैंने उसे आदतें सुधारने के लिए कहा। वह बहुत बदल गई है और हम दोनों ने महसूस किया कि हम एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। हम दोनों शादी करना चाहते हैं, उसे परिवार में एडजेस्ट करवाना मेरा काम है। अपना घर बनने से पहले हम शादी नहीं करेंगे।'

वह कुछ बोला नहीं। चुपचाप घर लौट आया।

परिवार की मजबूरियाँ उसे फिर अमेरिका ले गईं। सुलभा के पैसों से ही उसने टिकट खरीदा। सुलभा के डैड ने उन्हें अपने दोस्त के अंडर ही पोस्ट डॉक्टरेट की अनुमति दिलवा दी।

उसके दिल की धड़कन तेज हो गई, उसकी स्मृतियाँ भी तेज दौड़ने लगीं। अढ़ाई साल पोस्ट डॉक्टरेट करने के बाद वह नौकरी में आ गया। इस दौरान उसने खूब पैसा भेजा भाई और उमा ने जमीन खरीदी, स्वयं खड़े होकर एक महलनुमा घर बनवा दिया। वह यही सोचता रहा जमीन और घर माँ-बाबा के नाम है।

माँ ने तो उमा को स्वीकार कर लिया और गृहप्रवेश के दिन शंकर और उमा की नए घर में ही शादी कर दी उसी दिन उसकी अमेरिका में सुलभा से शादी हो गई। पहले कोर्ट में फिर विस्कॉन्सिन के मंदिर में। सुलभा के माँ-बाप

आँखों से झर-झर गिरने लगी। माँ ने अपना सख्त हाथ धीरे-धीरे उसके सिर और पीठ पर फेरना शुरू कर दिया। उसने माँ के हाथ अपने हाथ में लिए। समय के थपेड़ों, अभावों, घर के काम काज और सिलाई मशीन ने मां के हाथ कितने खुरदरे, सख्त और रूखे कर दिए हैं। वह उन्हें चूमता है, आँखों से लगाता है।

अगले महीने वह ट्यूशन की राशि के साथ माँ के लिए एक क्रीम लेकर आता है और हर रात सोने से पहले माँ के हाथों पर लगाता है। दिन में पहले माँ के हाथों पर क्रीम लगानी है। आज उसने माँ के नर्म हाथों का स्पर्श महसूस किया है।

उसी की देखा-देखी शंकर ने भी ट्यूशन करनी शुरू की। उमा भाई की सबसे पहली ट्यूशन है।

स्कूल में वह पूरी दिल्ली में टॉपर रहा। वह उन क्षणों को फिर से जी रहा है... दिल्ली यूनिवर्सिटी, हिन्दू कॉलेज, पहला दिन... साइंस विभाग। उसके पेट में कुछ हो रहा है... वह जान नहीं पा रहा क्या हो रहा है... वह बेहद खुश है।

दूसरे दिन से सुबह चार बजे से शुरू हुई दौड़ रात ग्यारह बजे थमती। वह पढ़ाई और ट्यूशनों में लगा रहा, घर में क्या हो रहा है, वह जान ही नहीं पाया...।

अतीत ने स्मृतियों का पर्दा क्या उठाया, बीते कल का मंच, जो पहले ही उसे खुले मैदान-सा लगा था, अब दृश्य दर दृश्य बदलने लगा... वह एम.एस.सी में है और पहली बार माँ की दबी-घुटी आवाज उग्र हुई है। उसे भाई का उमा को घर लाना मंजूर नहीं। उसे भी उस दिन पता चला, उमा भाई की दोस्त बन चुकी है। माँ का तर्क है, घर में बेटियाँ हैं, उन पर क्या असर पड़ेगा। वह चुप है, क्या कहे? वह कभी भाई के आगे बोला नहीं।

एम.एस.सी की परीक्षाओं तक घर में झगड़े बहुत बढ़ गए हैं... वह अधिकतर लाइब्रेरी में बैठता है। भाई की मनमानियाँ भी बढ़ गई हैं। वह इंजीनियर बन चुका है, नौकरी करता है। माँ से हर बात पर झगड़ा करता है। अधिकतर उमा उसके साथ ही होती है। एक बात उसने महसूस की, भाई का अहम् बहुत बढ़ गया है। हर समय 'मैं' के अलावा वह बात नहीं करता।

उसे अच्छा नहीं लगता। वह हैरान है, वह क्यों कुछ नहीं बोलता? काश! उस समय वह बोल देता, आज भाई का अहम् इतना विकराल रूप तो नहीं ले पाता।

परीक्षाएँ समाप्त हो गई हैं। वह घर पर है। कुछ दिन आराम करना चाहता है। माँ के पास बैठना चाहता है। माँ बहुत उदास रहने लगी है। वह माँ जो कष्टों में भी कभी नहीं घबराई, पता नहीं क्या सोचती रहती है!

एक और दृश्य उसकी आँखों के सामने घूम गया... माँ की गोद में वह आँखें मूंद कर पड़ा है... चेहरे पर उसने गर्म-गर्म बूँदें महसूस कीं। माँ रो रही है... रोते-रोते कह रही है... 'हरि, तू ही शंकर को समझा। उमा उसकी प्रेमिका है, दोस्त नहीं। मैं गाँधारी नहीं, मेरी आँखों पर पट्टी नहीं बाँधी हुई, न ही मैं इतनी बेवकूफ हूँ, जितना शंकर समझता है। शंकर के बदलते स्वभाव और उमा की चाल को पहचानती हूँ। बेटे, मैं अनपढ़ जरूर हूँ, पर अनुभव तुम लोगों से ज्यादा है।'

'माँ, आप अनपढ़ कहाँ हैं? अपने पोथियाँ नहीं पढ़ीं पर जीवन की किताब को बहुत गंभीरता से गुना है, समझा है। आप समझती हैं कि भाई मेरी बात सुनेगा।'

'कह कर तो देख। शायद तेरी बात सुन ले।'

एक दिन हिम्मत करके उसने शंकर को कनॉट प्लेस के काफी हाउस में अकेले मिलने को कहा। भाई आया पर उमा साथ है। पहली बार उसने उन दोनों को करीब से देखा। माँ का रोना सही है...।

सत्तर का दशक अंत की ओर बढ़ रहा है और यह दशक सार्वजनिक स्थानों पर मान-मर्यादाओं और सामाजिक पाबन्दियों का है। वह उन क्षणों को देख रहा है... उमा कितने विशाल तरीके से शंकर की बाजू पकड़ कर झूल जाती है। शंकर की गर्दन अकड़ जाती है, जैसे कोई किला फतह कर रहा है। उसकी आँखें झुक गई हैं, आस-पास के लोग अजीब नजरों से देख रहे हैं। वह वहाँ बैठ नहीं सका। उफ अच्छा। माँ का क्रोध उचित है। दोनों को मिलने से पहले माँ का यह कहना अजीब लगता है उसे। 'उमा माँ बाप की इकलौती औलाद है। लाड़-प्यार ने बिगाड़ दिया है। अथाह पैसा है। शंकर जैसा दामाद उमा के बाप को कहाँ मिलेगा; जिसके आगे-पीछे पूछने वाला कोई नहीं। देखना, शंकर को घर जमाई बनाएगा उमा का बाप एक दिन। इसीलिए बेटी को छूट दे रखी है, सारा दिन शंकर के साथ आवारागर्दी की तरह घूमती रहती है, क्या बाप को पता नहीं। आँखें मूंद ली हैं। लगा दिया है उसे शंकर के पीछे।' पर उमा को मिलने के बाद लगा कहीं पर माँ सही है, सिर्फ माँ के कहने का तरीका गलत है।

उमा का बिंदासपन और इठलाना, बेहद बनावटी कर रहा, कृत्रिम-सा लग रहा है। स्वाभाविक कुछ भी नहीं। उसका उठना बैठना, चलना-फिरना सब दिखावटी महसूस हो रहा है। बातचीत में कोई बुद्धिमत्ता नहीं झलकती। संस्कारों में पले भाई का उमा का यह व्यवहार आधुनिक होना लगा है शायद। तभी उसके साथ पैसे भी हो गए हैं। उन्होंने इस तरफ ध्यान नहीं दिया कि उमा जैसी लड़की उनके निम्न मध्य वर्गीय परिवार में रच बस नहीं पाएगी। फिर फिर भी भाई से बात करना चाहता है। ताकि वह समझ सके।

दूसरे दिन वह मंच के सामने शंकर के दफ्तर में है। भाई हैरानी से देख रहा है...

'क्या बात है हरि! तुम यहाँ...।'

'भाई आपसे बात करनी है...।'

'हाँ, बोलो!...।'

बिना किसी भूमिका के उसने शंकर से पूछा, 'भाई क्या आप सोचते हैं कि उमा हमारे परिवार के लिए ठीक रहेगी।'

'तुम्हीं बताओ, क्यों ठीक नहीं रहेगी? या माँ की बात कहने आए हो।'

'... हरि को सूझ नहीं रहा, क्या कहे?'

'हरि मैं उमा से प्यार करता हूँ। हाँ वह अमीर घर की खुले ख्यालों की लड़की है। माँ

आँखों से झर-झर गिरने लगी माँ ने अपना सख्त हाथ धीरे-धीरे उसके सिर और पीठ पर फेरना शुरू कर दिया उसने माँ के हाथ अपने हाथ में लिए। समय के थपेड़ों, अभावों, घर के काम काज और सिलाई मशीन ने मां के हाथ कितने खुरदरे, सख्त और रूखे कर दिए हैं। वह उन्हें चूमता है, आँखों से लगाता है।

अगले महीने वह ट्यूशन की राशि के साथ माँ के लिए एक क्रीम लेकर आता है और हर रात सोने से पहले माँ के हाथों पर लगाता है। दिन में पहली माँ के हाथों पर क्रीन लगाती है। आज उसने माँ के नर्म हाथों का स्पर्श महसूस किया है।

उसी की देखा-देखी शंकर ने भी ट्यूशन करनी शुरू की। उमा भाई की सबसे पहली ट्यूशन है।

स्कूल में वह पूरी दिल्ली में टॉपर रहा। वह उन क्षणों को फिर से जी रहा है... दिल्ली यूनिवर्सिटी, हिन्दू कॉलेज, पहला दिन... साइंस विभाग उसके पेट में कुछ हो रहा है... वह जान नहीं पा रहा क्या हो रहा है... वह बेहद खुश है।

दूसरे दिन से सुबह चार बजे से शुरू हुई दौड़ रात ग्यारह बजे थमती वह पढ़ाई और ट्यूशनों में लगा रहा, घर में क्या हो रहा है, यह जान ही नहीं पाया...।

अतीत ने स्मृतियों का पर्दा क्या उठाया, बीते कल का मंच, जो पहले ही उसे खुले मैदान-सा लगा था, अब दृश्य दर दृश्य बदलने लगा... वह एम.एस.सी में है और पहली बार माँ की दबी-घुटी आवाज उग्र हुई है। उसे भाई का उमा को घर लाना मंजूर नहीं। उसे भी उस दिन पता चला, उमा भाई की दोस्त बन चुकी है। माँ का तर्क है, घर में बेटियाँ हैं, उन पर क्या असर पड़ेगा। वह चुप है, क्या कहे? वह कभी भाई के आगे बोला नहीं।

एम.एस.सी की परीक्षाओं तक घर में झगड़े बहुत बढ़ गए हैं... वह अधिकतर लाइब्रेरी में बैठता है। भाई की मनमानियाँ भी बढ़ गई हैं। वह इंजीनियर बन चुका है नौकरी करता है। माँ से हर बात पर झगड़ा करता है। अधिकतर उमा उसके साथ ही होती है। एक बात उसने महसूस की, भाई का अहम् बहुत बढ़ गया है। हर समय 'मैं' के अलावा वह बात नहीं करता।

उसे अच्छा नहीं लगता। वह हैरान है, वह क्यों कुछ नहीं बोलता? काश! उस समय वह बोल देता, आज भाई का अहम् इतना विकराल रूप तो नहीं ले पाता

परीक्षाएँ समाप्त हो गई हैं। वह घर पर है। कुछ दिन आराम करना चाहता है। माँ के पास बैठना चाहता है। माँ बहुत उदास रहने लगी है। वह माँ जो कष्टों में भी कभी नहीं घबराई, पता नहीं क्या सोचती रहती है!

एक और दृश्य उसकी आँखों के सामने घूम गया... माँ की गोद में वह आँखें मूंद कर पड़ा है... चेहरे पर उसने गर्म-गर्म बूँदें महसूस कीं। माँ रो रही है... रोते-रोते कह रही है... 'हरि, तू ही शंकर को समझा। उमा उसकी प्रेमिका है, दोस्त नहीं मैं मानूँगी नहीं, मेरी आँखों पर पट्टी नहीं बांधी हुई, न ही मैं इतनी बेवकूफ हूँ, जितना शंकर समझता है। शंकर के बदलते स्वभाव और उमा की चाल को पहचानती हूँ। बेटे, मैं अनपढ़ जरूर हूँ, पर अनुभव तुम लोगों से ज्यादा है।'

'माँ, आप अनपढ़ कहाँ हैं? अपने पोथियाँ नहीं पढ़ीं पर जीवन की किताब को बहुत गंभीरता से पढ़ा है, समझा है आप समझती हैं कि भाई मेरी बात सुनेगा।'

'कह कर तो देख शायद तेरी बात सुन ले।'

एक दिन हिम्मत करके उसने शंकर को कनॉट प्लेस के कॉफी हाउस में अकेले मिलने को कहा। भाई आया पर उमा साथ है। पहली बार उसने उन दोनों को करीब से देखा। माँ का रोना सही है...।

सत्तर का दशक अंत की ओर बढ़ रहा है और यह दशक सार्वजनिक स्थलों पर मान-मर्यादाओं और सामाजिक पाबन्दियों का है। वह उन क्षणों को देख रहा है... उमा कितने बिंदास तरीके से शंकर की बांह पकड़ कर झूल जाती है। शंकर की गर्दन अकड़ जाती है, जैसे कोई किला फतह कर रहा हो। उसकी आँखें झुक गई हैं, आस-पास के लोग अजीब नजरों से देख रहे हैं। वह वहां बैठ नहीं सका। उठ आया। माँ का क्रोध उचित है। दोनों को मिलने से पहले माँ का यह कहना अजीब लगता है उसे 'उमा माँ बाप की इकलौती औलाद है। लाड़-प्यार ने बिगाड़ दिया है अथाह पैसा है। शंकर जैसा दामाद उमा के बाप को कहाँ मिलेगा; जिसके आगे-पीछे पूछने वाला कोई नहीं। देखना, शंकर को घर जमाई बनाएगा उमा का बाप एक दिन। इसीलिए बेटी को छूट दे दी है, सारा दिन शंकर के साथ आवारागर्दी की तरह घूमती रहती है, क्या बाप को पता नहीं। आँखें मूंद ली हैं। लगा दिया है उसे शंकर के पीछे।' पर उमा को मिलने के बाद लगा कहीं पर माँ सही है, सिर्फ माँ के कहने का तरीका गलत है।

उमा का बिंदासपन और इठलाना, बेहद बना-संवर कर रहना, कृत्रिम-सा लग रहा है। स्वाभाविक कुछ भी नहीं। उसका उठना बैठना, चलना-फिरना सब दिखावटी महसूस हो रहा है बातचीत में कोई बुद्धिमत्ता नहीं झलकती। संबंधों में भले भाई का उमा का यह व्यवहार आधुनिक होना लगा है शायद। तभी उसके साथ पैसे भी हो गए हैं। उन्होंने इस तरफ ध्यान नहीं दिया कि उमा जैसी लड़की उनके निम्न मध्य वर्गीय परिवार में रच बस नहीं पाएगी फिर फिर भी भाई से बात करना चाहता है। ताकि वह समझ सके

दूसरे दिन वह मंच के साथ शंकर के दफ्तर में है। भाई हैरानी से देख रहा है...

'क्या बात है हरि! तुम यहाँ...।'

'भाई आपसे बात करनी है...।'

'हाँ, बोलो!...।'

बिना किसी भूमिका के उसने शंकर से पूछा, 'भाई क्या आप सोचते हैं कि उमा हमारे परिवार के लिए ठीक रहेगी।'

'तुम्हीं बताओ, क्यों ठीक नहीं रहेगी? या माँ की बात कहने आए हो।'

'... हरि को कुछ नहीं रहा, क्या कहे?'

'भाई मैं उमा से प्यार करता हूँ। हाँ वह अमीर घर की झूठी छायाओं की लड़की है माँ

नहीं पूछेगा और समय आने पर जब वे लौटेंगे तभी पता चलेगा। तब तक देर हो चुकी होगी।'

'सुलभा, यह धोखा है हम सबके साथ। मैं इसका विरोध करूँगा। यह तो सरासर अन्याय है, इसके खिलाफ लड़ूँगा। पैसा चाहिए था, मुझे कहते क्या मैं नहीं देता, पर पैसा लेने का यह तरीका गलत है।'

'मानती हूँ धोखा किया है, अन्याय किया है। पर किससे लड़ेंगे? कहाँ लड़ेंगे? कानून को साथ लेकर धोखा किया है। कानूनी रूप से वे वकील होने का पूरा लाभ उठाया है।'

'मैं कम से कम उन्हें एहसास तो दिलवाऊँगा।'

'उससे क्या होगा? आप क्या सोचते हैं, उन्हें एहसास नहीं। तभी तो बेईमानी को हक का नाम देकर, गिल्ट फ्री हो रहे हैं। हरि आप अच्छी तरह जानते हैं, दिल और दिमाग, भावना और विवेक का द्वंद्व मानव के जीवन में हर समय चलता रहता है। कब किस का पलड़ा भारी हो जाए, कहा नहीं जा सकता। भौतिकता का आकर्षण कहाँ कुछ देखने देता है! यह दौड़ हो जाती है। भाई उस रेस में हिस्सा ले रहे हैं। जो आपके लिए गलत है, उन्हें सब जायज लग रहा है।'

'भाई को क्या हो गया है... वे ऐसे नहीं थे।'

'भाई भी इंसान हैं। उनके अन्दर कौरव और पाण्डव दोनों हैं, कब कौन बाहर निकल आए, कोई भी जान नहीं सकता। आपने उन्हें बहुत ऊँची चोटी पर बिठाया हुआ था, इसलिए चोट आपको गहरी लगी। देश में रहते हुए भी आप अपने संघर्ष में लगे रहे, उन्हें समझने के लिए आपके पास समय कहाँ था?'

'सुलभा सही कह रही है। पीएच-डी के बाद जब वह देश लौटा था, भाई लॉ कर चुका था, उसे भाई में एक शातिर मनुष्य पैदा होता महसूस हुआ था। दिल की तरंगें हावी हो गई थीं, विवेक को उसने छिटक दिया था। उसने अपनी ही छठी इंद्री को झुठला दिया था, जो उसे सचेत कर रही थी। काश! उसने भाई पर विश्वास किया होता। अन्धविश्वास नहीं।' दिल की तेज धड़कन के साथ-साथ उसकी सोच भी भागने लगी।

'अब देर हो चुकी है, बिस्तर से उठें, तैयार हों और जिस जगह साइन करने हैं, जाकर साइन कर दें। समय आ गया है, स्मृतियों के जाले झाड़ दें, उनमें कुछ नहीं बचा। जीवन को आगे बढ़ाएं... भाई ने एक अच्छा खरीददार भी ढूँढ लिया है, जो आपको व्हाइट मनी दे रहा है और भाई को... हमें उससे कुछ लेना-देना नहीं।' सुलभा ने उसे बाजू से पकड़ कर उठाते हुए कहा।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई, नरेश की आवाज थी... 'हरि भाई, सुलभा भाभी तैयार होकर ड्राइंग रूम में आ जाएं, शंकर भाई और उमा भाभी आए हैं। सभी यहाँ इकट्ठे हो रहे हैं...।'

वे दोनों जल्दी-जल्दी तैयार होकर ड्राइंग रूम में आ गए। सारे बैठे हैं पर कमरे में खामोशी है। चेहरों पर उदासी है। कोई भी आपस में बात नहीं कर रहा। शंकर और उमा सिर झुकाए बैठे हैं।

'चलिए, कहाँ चलकर साइन करने हैं?' हरि ने ड्राइंग रूम में आते ही कहा। सब उसके चेहरे पर छाई गंभीरता को देखते रह गए। शंकर हरि को देखे बिना ही बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ गया। उसके साथ उमा भी हो ली। हरि ने नरेन्द्र और सुरेन्द्र को साथ चलने के लिए इशारा किया। माँ सुबकने लगीं। सुलभा माँ के पास बैठ गई। सरोज और रजनी माँ को चुप कराने लगीं।

'मिस्टर हरि यहाँ साइन करें, आप कब से पेन पकड़ कर बैठे हैं, खरीददार बेचैन हो रहा है। मेरा भी समय वेस्ट हो रहा है, आप किन ख्यालों में खो गए।' वकील के जोर जोर से कहने पर वह सचेत हुआ।

हरि ने अपने आपको संभाला, कुर्सी पर पहलू बदला और स्मृतियों को झटक कर अपने से अलग किया। जल्दी से कागजों पर हस्ताक्षर किए और शंकर को कहा- 'भाई, पैसा चाहिए था तो मुझे कहते, यूँ धोखे से हक के नाम पर वसूली न करते, हक तो आपने परिवार का मारा है। यह घर परिवार के लिए बनाया गया था, आपके और मेरे लिए नहीं।' यह कह कर जब वहाँ से उठने लगा कि वकील ने रोका और उसे खरीददार का चेक दिया, जो उसके आधे हिस्से का था।

उसने चेक पकड़ा और शंकर को तीखी नजरों से देखते हुए नरेन्द्र से कहा- 'किसी रियल एस्टेट एजेंट के पास ले चलो, माँ-बाबा के लिए घर लेना है। नया घर सिर्फ माँ-बाबा का होगा। उस पर किसी बच्चे का कोई हक नहीं होगा। उनके बाद उस घर में वे माँ-बाप रहेंगे... जिनके सिर पर से छत उनके बच्चे छीन लेते हैं...! ❑

आधारशिला से प्रकाशित कृष्णलता सिंह
का चर्चित उपन्यास व कहानी संग्रह

डॉ. कृष्णलता सिंह